स्वदेशी तकनीक से चीनी मिलों में घटी ताजे जल की खपत, प्रदूषण में भी कमी

जागरण विशेष

जल संरक्षण के लिए एनएसआइ के विज्ञानियों ने किया अहम नवोन्मेष, अब उत्सर्जित जल से सिंचाई भी संभव

अखिलेश तिवारी • कानपुर

स्वदेशी तकनीक से चीनी मिलों में ताजे जल की खपत कम करने के साथ इनसे होने वाला प्रदूषण कम करने में भी मदद मिली है। कानपुर स्थित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) के विज्ञानियों ने चीनी मिलों में जलशोधन के लिए सस्ती तकनीक विकसित की है। इससे गंगा बेसिन में स्थित चीनी मिलों को काफी लाभ होगा और जल संरक्षण में भी मदद मिलेगी।

सल्फर का शोधनः इस तकनीक के प्रयोग से चीनी मिलें ऐसे जल का उत्सर्जन कर रही हैं जो किसानों के खेतों में सिंचाई के काम भी आ सकता है। चीनी मिलों में सबसे बड़ी समस्या सल्फरयुक्त पानी का निकास है। जलशोधन संयंत्र भी चीनी मिलों के पानी में घुले सल्फर का शोधन नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में एनएसआइ ने सल्फर मुक्त जल के लिए तकनीक विकसित की।

लंबे अनुसंधान के बाद मिली सफलताः एनएसआइ के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन बताते हैं कि जलशोधन के लिए लंबे समय तक कई अनुसंधान किए गए। जलशोधन संयंत्र की लागत घटाई गई। चीनी मिलों में ताजा पानी का सर्वाधिक प्रयोग होता रहा है। पहले चीनी मिलें प्रति टन गन्ना खपत पर 155 लीटर ताजा पानी प्रयोग करती रही हैं। अब इस नई तकनीक से चीनी मिलों में ताजा जल का उपभोग घटकर 77 लीटर प्रति टन तक पहुंच गया है।

उप्र के अमरोहा में चीनी मिल के जल उत्सर्जन संयंत्र का निरीक्षण करते एनएसआइ के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन (दाएं से दूसरे) • सौ. एनएसआइ

प्रदूषण मानकों का निरीक्षण

एनएसआइ की ओर से देश की चीनी मिलों के उत्सर्जन व जल उपभोग समेत प्रदूषण मानकों का हर वर्ष भौतिक निरीक्षण किया जाता है। प्रदूषण की निगरानी के लिए लगे उपकरणों की रिपोर्ट प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तक पहुंचती है। यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन के महासचिव दीपक गुप्तारा बताते हैं कि एनएसआइ की मदद से मिलों में ताजे पानी की खपत कम हुई है। अब हम सभी चीनी मिलों में यह तकनीक लागू करने का प्रयास कर रहे हैं।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

nwda.gov.in